Shodhaamrit, Vol.-2; Issue-1 (Jan.-June) 2025 : Page No.-198-203

शोधामृत

(कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की अर्धवार्षिक, सहकर्मी समीक्षित, मूल्यांकित शोध पत्रिका)

ISSN : 3048-9296 (Online)
3049-2890 (Print)
IIFS Impact Factor-2.0
Vol.-2; issue-1 (Jan.-June) 2025
Page No- 198-203

©2025 Shodhaamrit (Online & Print)
www.shodhaamrit.gyanvividha.com

डॉ. रणधीर कुमार
सहायक प्राध्यापक (मनोविज्ञान विभाग),
समस्तीपुर कॉलेज, समस्तीपुर.

Corresponding Author :
डॉ. रणधीर कुमार
सहायक प्राध्यापक (मनोविज्ञान विभाग),
समस्तीपुर कॉलेज, समस्तीपुर.

व्यक्तियों के मनोवैज्ञानिक अच्छाई पर धार्मिकता के प्रभाव का अध्ययन

शोध-सारांश : प्रस्तुत शोध का उद्देश्य व्यक्तियों के मनोवैज्ञानिक अच्छाई पर धामिकता के प्रभाव का अध्ययन करना था। इसके लिए बिहार राज्य के समस्तीपुर जिला क्षेत्र से कुल 250 व्यक्तियों को उत्तरदाता के रूप में चयनित किया गया। चयनित उत्तरदाताओं की उम्र सीमा 25 वर्ष से लेकर 45 वर्ष (औसत उम्र 35 वर्ष) थी। उत्तरदाताओं के चयन में उद्देश्यात्मक विधि का अवलोकन किया गया। सिसौदिया एवं चौधरी द्वारा विकसित मनोवैज्ञानिक अच्छाई मापनी एवं एल. आई. भूषण द्वारा विकसित धार्मिकता मापनी को उत्तरदाताओं के उपर विकसित करते हुए प्रदत्तों का संग्रह किया गया। इसके अतिरिक्त स्वयं शोधार्थी द्वारा विकसित व्यक्तिगत सूचना प्रपत्र के माध्यम से उत्तरदाताओं के संबध में व्यक्तिगत जानकारी प्राप्त की गई। संग्रहित किए गए प्रदत्तों को उचित सांख्यिकीय विश्लेषण पद्धति के द्वारा विश्लेषित करते हुए परिणाम तैयार किया गया। प्राप्त परिणाम के आधार पर स्पष्ट है कि (i) धार्मिकता एवं मनोवैज्ञानिक अच्छाई के बीच सकारात्मक सहसंबंध होता है। (ii) धार्मिकता की दृष्टि से व्यक्तियों के मनोवैज्ञानिक अच्छाई में सार्थक रूप से भिन्नता होती है अर्थात् धार्मिकता की प्रवृत्ति वाले व्यक्तियों में मनावैज्ञानिक अच्छाई का स्तर सामान्य व्यक्तियों की अपेक्षा अच्छा होता है एवं (iii) कार्यरत एवं सामान्य व्यक्तियों के धार्मिकता की प्रवृत्ति में कोई अंतर नहीं होता है, जबकि कार्यरत व्यक्तियों में सामान्य व्यक्तियों के अपेक्षा मनोवैज्ञानिक अच्छाई का स्तर बेहतर होता है।

शब्द कुंजी : व्यक्तियों, मनोवैज्ञानिक, अच्छाई, धार्मिकता, प्रभाव।

परिचय : मनोवैज्ञानिक अच्छाई एक बहुआयामी अवधारणा है, जो मानवीय जीवन में सकारात्मक संबंधों को विकसित करने एवं अनुकूलित करने की क्षमता को दर्शाता है। मानव जीवन के निमित्त मनोवैज्ञानिक अच्छाई को एक विशेषता एवं सकारात्मक मानसिक अवस्था के रूप में देखा जाता है।

मनोवैज्ञानिक अच्छाई व्यक्ति के मानसिक एवं भावनात्मक स्वास्थ्य की एक महत्वपूर्ण अवस्था होती है। यह सिर्फ मानसिक बीमारी की अनुपस्थिति नहीं होकर जीवन में संतुष्टि, उद्देश्य एवं सकारात्मकता की उपस्थिति को दर्शाती है। अतः मनोवैज्ञानिक अच्छाई व्यक्ति के जीवन की गुणवत्ता का केन्द्रीय पहलू होता है, जिसमें जीवन की चुनौतियों का सामना करने, उत्पादक के रूप में काम करने और समाज में सकारात्मक उपस्थिति में सक्षम बनाता है।

मनोवैज्ञानिक अच्छाई के कुछ घटक होते हैं, जिसमें आत्म-स्वीकृति, व्यक्तिगत विकास, जीवन का निश्चित लक्ष्य, पर्यावरणीय कुशलता, स्वायत्तता एवं सकारात्मक संबंध मुख्य होता है।

मानव जीवन के लिए मनोवैज्ञानिक अच्छाई का अधिक महत्त्वपूर्ण स्थान है। इस संबंध में विशेषज्ञों का सलाह है कि, हम मानसिक रुप से अच्छा रहकर हीं विभिन्न प्रकार की समस्याओं से बच सकते हैं। साथ हीं, अपने जीवन में शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार करने, रचनात्मकता को बढ़ाने, बेहतर निर्णय लेने इत्यादि के अलावे चिंता, अवसाद एवं अन्य प्रकार की समस्याओं के निराकरण में मनोवैज्ञानिक अच्छाई महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

धार्मिकता किसी व्यक्ति का धार्मिक विश्वासों, मूल्यों और व्यवहारों के प्रति प्रतिबद्धता की स्थिति होती है, जिसमें धर्म के प्रति भक्ति, आस्था और ईश्वर या किसी उच्च शक्ति में विश्वास सम्मिलित होता है। यह नैतिकता, कर्त्तव्यनिष्ठा और धार्मिक क्रिया-कलापों के पालन से जुड़ी होती है, जो बाहरी दिखावा न होकर आन्तरिक विश्वास से जुड़ी होती है। धर्म के संबंध में विभिन्न जानकारों का विचार है कि धर्म व्यक्ति को परिवार, समाज एवं राष्ट्र से जोड़ता है। यह व्यक्ति में आध्यात्मिकता, नैतिकता एवं पवित्रता को बढ़ाती है और वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में संघर्ष करने की क्षमता में वृद्धि करती है। साथ हीं, धार्मिकता की प्रवृत्ति मनुष्य के मस्तिष्क को शान्ति प्रदान करता है और नैतिकता को कायम रखता है।

हमारे समाज में जो धार्मिक क्रियाएँ सम्पादित होती है रहती है, उसमें प्रार्थना, समाधि, ध्यान, अनुष्ठान, यज्ञ, तांत्रिक क्रियाऐं, बलि, धार्मिक सभा इत्यादि मुख्य होती है। इन्हीं क्रियाओं के माध्यम से लोग अपने जीवन में धार्मिक हितों की पूर्ति करता है।

भारतीय समाज में धार्मिकता को अनेक रुपों में स्वीकार किया गया है, जैसे-आध्यात्मिकता, नीति भावना, संस्था, इत्यादि। मानव समुदाय का कुछ भाग आध्यात्मिकता के रुप में धार्मिकता की भावना को प्रकट करते हैं। आध्यात्मिकता के रुप में धर्म आधारित क्रियाऐं जैसे-आराधना, प्रार्थना, कथा वाचन इत्यादि सम्मिलित होते हैं। इसी प्रकार मानवीय समुदाय का कुछ भाग धर्म को नीति के रुप में एवं भावना के रुप में स्वीकार करते हैं, जबकि कुछ मानवीय समुदाय धर्म को संस्था के रुप में स्वीकार करते हैं।

मनोवैज्ञानिक अच्छाई और धार्मिकता के बीच बहुआयामी संबंध है। धर्म मानवीय जीवन में सामाजिक समर्थन, उद्देश्य एवं जीवन के अर्थ से आधारित ज्ञान को सृजित करता है, वहीं परोपकारिता एवं सकारात्मक व्यवहार को बढ़ावा देते हुए मानसिक स्वास्थ्य में सुधार लाता है। कभी-कभी धर्म आधारित नकारात्मक प्रथाएँ एवं अपराधबोध एवं हठधर्मिता मानवीय कल्याण को नुकसान भी पहुँचाती है।

इस प्रकार, मनोवैज्ञानिक अच्छाई और धार्मिकता के बीच संबंध की व्याख्या के आधार पर कहा जा सकता है कि धार्मिकता की भावना मनुष्य में जहाँ दया, करुणा, समर्थन, कल्याण की भावना को जागृत करती है, वहीं मानवीय जीवन में मनोवैज्ञानिक खुशी एवं संतुष्टि को लाती है।

पूर्व के अध्ययनों की समीक्षाऐं : प्रस्तुत शोध में शोध को सही दिशा में सम्पादित करने एवं मानकता को बढ़ाने के लिए शोध शीर्षक आधारित पूर्व के कुछ अध्ययनों का अवलोकन किया गया है। विश्वविद्यालय के छात्रों में मनोवैज्ञानिक अच्छाई को लेकर मोघे एवं मिश्रा (2024) ने अध्ययन किया है और परिणाम के रूप में पाया है कि, मनोवैज्ञानिक अच्छाई पर यौन संबंधी कारक का कोई स्पष्ट प्रभाव

नहीं पड़ता है, जबकि प्रतिदिन महाविद्यालय आनेवाले और छात्रावास में रहनेवाले छात्रों के मनोवैज्ञानिक अच्छाई में भी कोई भिन्नता नहीं होती है।

डे0 (2005) ने कार्यस्थल पर धार्मिकता का अध्ययन किया है और निष्कर्ष के रूप में परामर्शित किया है कि कार्यस्थल पर कर्मचारियों के द्वारा की जानेवाली कार्य की गुणवत्ता धार्मिकता की भावना से निर्धारित होती है। इसके अलावे उन्होंने कर्मचारियों में धार्मिकता की दृष्टि से भिन्नता भी पाया है।

भारती इत्यादि (2015) ने अपने अध्ययन के आधार पर कहा है कि उम्र संबंधी कारक मनोवैज्ञानिक अच्छाई के साथ सकारात्मक रूप से सहसंबंधित होती है। जबकि पुरुषों में पैर से संबंधित समस्याओं एवं मनोवैज्ञानिक अच्छाई एवं मधुमेह को नकारात्मक रूप से सहसंबंधित पाया गया है।

प्रभा एवं मगदालिन (2016) ने महाविद्यालय जानेवाले लड़कियों में अकेलापन, चिन्ता, मनो-वैज्ञानिक स्वास्थ्य एवं अलगाव के अनुभव का अध्ययन किया है और परिणाम के रूप में पाया है कि मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य, अकेलापन एवं चिन्ता के साथ इंटरनेट की आदत का कोई स्पष्ट एवं सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।

टेमर इत्यादि (2022) ने धार्मिकता, पवित्रता एवं अच्छाई से संबंधित क्षेत्र आधारित अध्ययन के आधार पर परामर्शित किया है कि कर्मचारियों में अच्छाई के लिए पवित्रता बहुत ही महत्वपूर्ण होती है जबकि धार्मिकता व्यक्तिगत अच्छाई को सार्थक रूप से निर्धारित करती है।

अर्सलान (2024) ने युवाओं में मनोवैज्ञानिक अच्छाई और मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित शोध आधारित अध्ययन में कहा है कि युवाओं में मानसिक स्वास्थ्य के स्तर में भिन्नता आने से उसकी मनोवैज्ञानिक अच्छाई पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

ओवेरगॉन (2024) ने धार्मिकता, पवित्रता एवं कार्य मूल्य का संबंधात्मक अध्ययन किया है और परामर्शित किया है कि, व्यक्ति के द्वारा किए गए कार्य की महत्ता उसके धार्मिकता एवं पवित्रता के उपर निर्भर करती है।

शोध का उद्देश्य : इस शोध का मुख्य उद्देश्य व्यक्तियों के मनोवैज्ञानिक अच्छाई पर धार्मिकता के प्रभाव का अध्ययन करना था।

परिकल्पनाएँ : वर्त्तमान शोध की मुख्य परिकल्पनाऐं निम्नांकित है :

i. धार्मिकता एवं मनोवैज्ञानिक अच्छाई के बीच सकारात्मक सहसंबंध होगा।
ii. धार्मिकता की दृष्टि से उत्तरदाताओं के मनो-वैज्ञानिक अच्छाई में भिन्नता होगी।
iii. कार्यरत उत्तरदाताओं एवं सामान्य व्यक्तियों के मनोवैज्ञानिक अच्छाई में सार्थक अंतर होगा एवं
iv. सामान्य उत्तरदाताओं में धार्मिकता की प्रवृत्ति अधिक होगी जबकि कार्यरत महिलाओं में धार्मिकता की प्रवृत्ति कम होगी।

प्रविधि :

(i) प्रतिदर्श : इस शोध में उत्तरदाता के रूप में समस्तीपुर जिला (बिहार राज्य) क्षेत्र से कुल 250 व्यक्तियों का चयन किया गया। चयनित प्रतिदर्शों की विवरणी निम्नवत् हैः

i. कुल प्रतिदर्श - 250
ii. कार्यरत प्रतिदर्श - 125
iii. सामान्य प्रतिदर्श - 125
iv. प्रतिदर्शों की उम्र सीमा- 25 वर्ष से 45 वर्ष (औसत उम्र-35 वर्ष)
v. प्रतिदर्शों की स्थिति- स्वस्थ्य एवं सामान्य

(ii) मापनियाँ : इस शोध में उत्तरदाताओं से संगत प्रदत्तों के संग्रहण के लिए निम्नांकित मापनियों का प्रयोग किया गया :

(a) मनोवैज्ञानिक अच्छाई मापनी : उत्तरदाताओं के संबंध में मनोवैज्ञानिक अच्छाई की जानकारी के लिए सिसौदिया एवं चौधरी द्वारा विकसित मनोवैज्ञानिक अच्छाई मापनी का उपयोग किया गया। यह मापनी वर्त्तमान संदर्भ में व्यक्तियों के मनोवैज्ञानिक अच्छाई के स्तर की जानकारी के लिए वास्तविक वैध, उपयुक्त एवं विश्वसनीय मापनी है।

(b) धार्मिकता मापनी : उत्तरदाताओं में धार्मिकता के प्रवृत्ति की माप के लिए एल.आई. भूषण द्वारा विकसित धार्मिकता मापनी का प्रयोग किया गया।

इस मापनी में कुल 36 एकांशों को सम्मिलित किया गया है। यह मापनी भी व्यक्तियों में धार्मिकता की माप के लिए काफी विश्वसनीय, उपयुक्त, वैध एवं वास्तविक मापनी है।

(c) व्यक्तिगत सूचना-प्रपत्र : उत्तरदाताओं के संबध में व्यक्तिगत एवं पारिवारिक जानकारी के लिए स्वय द्वारा विकसित व्यक्तिगत सूचना-प्रपत्र का प्रयोग किया गया।

प्रदत्त-संग्रह की प्रक्रिया : वर्तमान शोध में उत्तरदाताओं से प्रदत्तों के संग्रहण के लिए शोधार्थी द्वारा अच्छे तरीके से योजना बनाई गई। बनाई गई योजना के अनुसार सबसे पहले अध्ययन क्षेत्र का भ्रमण किया गया और उत्तरदाताओं को लक्षित करते हुए उसकी सूची तैयार की गई। इसके बाद उत्तरदाताओं के साथ निर्धारित किए गए स्थान एवं समय पर अल्प समूह बनाकर चयनित मापनियों को उत्तरदाताओं के उपर प्रशासित करते हुए प्रदत्त-संग्रह का कार्य पूर्ण किया गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण : संग्रहित किए गए प्रदत्तों को सांख्यिकीय विश्लेषण पद्धति के आधार पर विश्लेषित करते हुए परिणाम तैयार किया गया।

परिणाम एवं व्याख्या : इस शोध में प्राप्त किए गए परिणामों की विवरणी निम्नांकित हैः

(i) धार्मिकता एवं मनोवैज्ञानिक अच्छाई के बीच सहसंबंध : धार्मिकता एवं मनोवैज्ञानिक अच्छाई के बीच सहसंबंधात्मक परिणाम को निम्नांकित सारणी संख्या-(i) में प्रस्तुत किया गया है :

सारणी संख्या- (i)

धार्मिकता एवं मनोवैज्ञानिक अच्छाई के बीच सहसंबंध

समूह	मनोवैज्ञानिक अच्छाई का स्तर	सार्थकता का स्तर
धार्मिकता की मनोवृत्ति वाले उत्तरदाताऐं	0.84	<.01

उपरोक्त सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि, धार्मिकता की मनोवृत्ति वाले उत्तरदाताओं ने मनोवैज्ञानिक अच्छाई मापनी पर उच्चतम अंक प्राप्त किया है। इस परिणाम के आधार पर कहा जा सकता है कि धार्मिकता की भावना जब व्यक्ति में बढ़ती है तो उसमें मनोवैज्ञानिक रूप से अच्छाई में वृद्धि होती है। अतः इस तरह यह परिणाम धार्मिकता एवं मनोवैज्ञानिक अच्छाई के बीच सकारात्मक सहसंबंध को दर्शाता है।

(ii) धार्मिकता की दृष्टि से मनोवैज्ञानिक अच्छाई का प्रभावात्मक अध्ययन : मनोवैज्ञानिक अच्छाई पर धार्मिकता की मनोवृत्ति के प्रभाव की जानकारी की दृष्टि से परिणाम तैयार किया गया, जिसे सारणी संख्या-(ii) में उपस्थापित किया गया है :

सारणी संख्या-(ii)

मनोवैज्ञानिक अच्छाई पर धार्मिकता के प्रभाव का अध्ययन आधारित परिणाम

समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी-मूल्य	सार्थकता का स्तर	स्वतंत्रता का अंश
धार्मिकता की मनोवृत्ति वाले उत्तरदाताएँ	125	32.74	6.79	<.01	3.624	248
धार्मिकता की मनोवृत्ति से अलग उत्तरदाताएँ	125	29.97	5.12			

उपरोक्त सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि, जहाँ धार्मिकता की मनोवृत्ति वाले उत्तरदाताओं ने मनोवैज्ञानिक अच्छाई मापनी पर अधिकतम माध्य (32.74) एवं मानक विचलन (6.79) प्राप्त किया है,

वहीं धार्मिकता की मनोवृत्ति से अलग उत्तरदाताओं ने कम माध्य (29.97) एवं मानक विचलन (5.12) प्राप्त किया है। इस परिणाम के आधार पर कहा जा सकता है कि धार्मिकता की मनोवृत्ति बढ़ने से व्यक्ति मनो-वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अच्छाई का अनुभव करता है।

(iii) कार्यरत एवं अकार्यरत व्यक्तियों के मनोवैज्ञानिक अच्छाई का तुलनात्मक अध्ययन संबंधी परिणाम : व्यक्तियों के मनोवैज्ञानिक अच्छाई पर उसके कार्यरत रहने अथवा नहीं रहने संबंधी कारक के प्रभाव की जानकारी के उद्देश्य से परिकलित किए गए परिणाम को निम्नांकित सारणी में प्रस्तुत किया गया है :

सारणी संख्या-(iii)

कार्यरत एवं अकार्यरत व्यक्तियों के मनोवैज्ञानिक अच्छाई का तुलनात्मक अध्ययन संबंधी परिणाम

समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी-मूल्य	सार्थकता का स्तर	स्वतंत्रता का अंश
कार्यरत उत्तरदाताएँ	125	38.54	8.22	3.265	<.01	248
अकार्यरत उत्तरदाताएँ	125	35.53	6.22			

उपरोक्त सारणी के अवलोकन से स्पष्ट है कि उत्तरदाताओं के मनोवैज्ञानिक अच्छाई पर उनके कार्यरत रहने अथवा नहीं रहने संबंधी कारक का कोई स्पष्ट प्रभाव पड़ता है, क्योंकि कार्यरत उत्तरदाताओं ने मनोवैज्ञानिक अच्छाई मापनी पर लगभग अधिक माध्य (38.54) एवं मानक-विचलन (8.22) प्राप्त किया है, जबकि परिकलित टी-मूल्य (3.265) विश्वास के किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया है। इस परिणाम के परिपेक्ष्य में कहा जा सकता है कि, व्यक्तियों की मनोवैज्ञानिक अच्छाई उनकी कार्यशीलता की स्थिति से प्रभावित होती है।

(iv) कार्यरत एवं सामान्य व्यक्तियों में धार्मिकता की प्रवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन संबंधी परिणाम : व्यक्तियों के धार्मिकता आधारित मनोवृत्ति पर उनके कार्यरत रहने संबंधी कारक के प्रभाव का अध्ययन किया गया। इस संबंध में प्राप्त परिणाम को निम्नांकित सारणी में प्रस्तुत किया गया है :

सारणी संख्या- (IV)

मनोवैज्ञानिक अच्छाई पर धार्मिकता के प्रभाव का अध्ययन आधारित परिणाम

समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी-मूल्य	सार्थकता का स्तर	स्वतंत्रता का अंश
कार्यरत उत्तरदाताएँ	125	134.97	15.36	0.223	N.S.	248
सामान्य उत्तरदाताएँ	125	134.54	15.11			

उपरोक्त सारणी में वर्णित परिणाम के आधार पर स्पष्ट है कि, कार्यरत एवं सामान्य उत्तरदाताओं ने धार्मिकता मापनी पर लगभग समान माध्य (क्रमशः 134.97 एवं 134.54) एवं मानक विचलन (क्रमशः 15.36 एवं 15.11) प्राप्त किया है, जबकि परिकलित टी-मूल्य (0.223) विश्वास के किसी भी स्तर पर सार्थक नहीं पाया गया है। अतः इस परिणाम के संदर्भ में कह सकते हैं कि, व्यक्तियों के कार्यरत रहने अथवा नहीं रहने से उनकी धार्मिकता की प्रवृत्ति प्रभावित नहीं होती है।

निष्कर्ष : प्रस्तुत शोध में प्राप्त परिणाम के आधार पर निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि-

i. धार्मिकता एवं मनोवैज्ञानिक अच्छाई के बीच सकारात्मक सहसंबंध होता है।
ii. धार्मिकता की दृष्टि से व्यक्तियों के मनोवैज्ञानिक अच्छाई में सार्थक रूप से भिन्नता होती है अर्थात् धार्मिकता की प्रवृत्ति वाले व्यक्तियों में मनावैज्ञानिक अच्छाई का स्तर सामान्य व्यक्तियों की अपेक्षा अच्छा होता है एवं
iii. कार्यरत एवं सामान्य व्यक्तियों के धार्मिकता की प्रवृत्ति में कोई अंतर नहीं होता है, जबकि कार्यरत व्यक्तियों में सामान्य व्यक्तियों के अपेक्षा मनोवैज्ञानिक अच्छाई का स्तर बेहतर होता है।

शोध की सीमाएँ : प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा क्षेत्र भ्रमण, प्रदत्त-संग्रह कार्य, उत्तरदाताओं से संपर्क, आर्थिक संसाधन, उत्तरदाताओं का छोटा आकार इत्यादि जैसी समस्याओं का सामना किया गया है। जिस कारण इस शोध में हुई कमियों के होने से इंकार नहीं किया जा सकता है।

परामर्शन : इस शोध में प्राप्त परिणाम के आधार पर परामर्शन के रूप में कहा जा सकता है, व्यक्ति के जीवन के लिए धार्मिकता एवं मनोवैज्ञानिक अच्छाई का महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि इसके माध्यम से स्वास्थ्य एवं खुशहाल मानवीय जीवन की परिकल्पना को साकार किया जा सकता है।

संदर्भ-सूची :

1. अर्सलान, जी0 (2023) : युवाओं में मनोवैज्ञानिक अच्छाई और मानसिक स्वास्थ्य,शिक्षा मनोविज्ञान आधारित पत्रिका, 10(7), 1269-1277.
2. ऑवरेगॉन, एस0एल0 (2024) : धार्मिकता, पवित्रता एवं कार्य मूल्य का अध्ययन, व्यवसाय आधारित शोध पत्रिका, 179, 573-595.
3. जेम्स, ए0 एवं वेल्स, ए0 (2003) : संज्ञानात्मक, व्यवहारात्मक रचना पर धार्मिकता एवं मानसिक स्वास्थ्य के प्रभाव का अध्ययन, स्वास्थ्य मनोविज्ञान से संबंधित ब्रिटिश पत्रिका, 08(3), 359-376.
4. टेमर, के0 एवं अलजाफरी, डी0जे0 (2022) : धार्मिकता, पवित्रता एवं अच्छाईः एक क्रमबद्ध अध्ययन, पर्यावरण एवं व्यवसाय आधारित पत्रिका, 02(1), 341-357.
5. डे0एन0ई0 (2005) : कार्यस्थल में धर्म : व्यक्तिगत व्यवहार के संदर्भ में अध्ययन, प्रबंधन, आध्यात्मिकता एवं धार्मिकता आधारित पत्रिका, 2(1), 104-135
6. प्रभा, डी0 एवं मगदालिन, एस0 (2016) : अकेलापन, सामाजिक चिन्ता एवं मनोवैज्ञानिक अच्छाई का इंटरनेट की आदत के साथ संबंध, भारतीय मनोविज्ञान आधारित अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका, 3(4), 63-69.
7. प्रति, जी0 (2023) : धर्म और अच्छाई के बीच सम्बन्ध की सार्थकता का अध्ययन, धर्म और अध्यात्मिकता संबंधित पत्रिका, 24(3), 67-76.
8. भारती, एच0 सुभाषिणी, आर0 एवं लवण्या, टी0 (2015) : टाइप-2 मधुमेह के लोगों में मनो-वैज्ञानिक अच्छाई का अध्ययन, प्रयुक्त शोध आधारित भारतीय पत्रिका, 5.
9. मोघे, एस0 एवं मिश्रा, एस0 (2024) : विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों में मनोवैज्ञानिक अच्छाई का अध्ययन, भारतीय मनोविज्ञान आधारित अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका, 12(1),2634-2643.
10. रसल, पी0भी0 (2019) : किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य पर अभिभावकत्व शैली का प्रभाव, गुजरात शोध सोसाईटी से संबंधित पत्रिका, 21(14).
11. शाहीन, एस0 एवं शाहीन, एच0 (2016) : विद्यार्थियों में सांवेगिक बुद्धि और मनोवैज्ञानिक अच्छाई का अध्ययन, भारतीय मनोविज्ञान आधारित अंतर्राष्ट्रीयपत्रिका,वॉल्युम-3(4),63-71.

•